*वित्तीय स्थिरता की सुरक्षा: आश्वासन संबंधी कार्यों की महत्वपूर्ण भूमिका**

स्वामीनाथन जे.

मुख्य अनुपालन अधिकारी, मुख्य जोखिम अधिकारी, आंतरिक लेखापरीक्षा प्रमुख, भारतीय रिज़र्व बैंक के सहकर्मी, देवियो और सज्जनो। आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ और शुभ दोपहर।

आज जब हम आश्वासन कार्यों के प्रमुखों के इस उद्घाटन सम्मेलन के लिए एकत्रित हुए हैं तो मुझे आपको संबोधित करते हुए खुशी हो रही है। पिछले साल, सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों के बैंकों के बोर्डों के साथ हमारी बातचीत में, गवर्नर ने आश्वासन कार्यों की स्वतंत्रता के महत्व के साथ-साथ एक मजबूत अनुपालन और जोखिम संस्कृति की स्थापना के लिए व्यावसायिक कार्यों को रचनात्मक रूप से चुनौती देने के उनके अधिकार पर जोर दिया था। दरअसल, आज का यह सम्मेलन इस बात का प्रमाण है कि रिज़र्व बैंक वित्तीय अखंडता की सुरक्षा और नियामक अनुपालन को बढ़ावा देने के संदर्भ में आश्वासन कार्यों को कितना महत्वपूर्ण महत्व देता है।

निस्संदेह, यह वित्तीय सेवा उद्योग के लिए अच्छा समय है, जो प्रदर्शन और सुदृढ़ता के मजबूत मापदंडों की विशेषता है। यह उल्लेखनीय स्थिति अनुपालन, जोखिम प्रबंधन और आंतरिक लेखापरीक्षा कार्यों की कड़ी मेहनत और अटूट समर्पण के कारण है। तथापि, हमारी सफलता से हमारे अंदर आत्मसंतुष्टि नहीं आनी चाहिए। क्षितिज पर उभरने वाले जोखिमों की पहचान करने और उन्हें कम करने के लिए सतर्कता और सक्रिय सतर्क रुख आवश्यक है।

वित्तीय स्थिरता के संरक्षक के रूप में, हमें परिचित और अप्रत्याशित दोनों स्रोतों से उत्पन्न होने वाले जोखिमों के प्रति पूरी तरह सतर्क रहना चाहिए। व्यवसाय मॉडल में जोखिम अंतर्निहित हो सकते हैं जैसे किसी विशेष क्षेत्र या फंडिंग के स्रोतों पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करना। वे संचालन पर अपर्याप्त निगरानी के कारण भी उत्पन्न हो सकते हैं, खासकर आउटसोर्सिंग जैसे कमजोर क्षेत्रों में। प्रौद्योगिकी के बढ़ते उपयोग और वित्त के व्यापक डिजिटलीकरण से नई चुनौतियाँ सामने आती हैं, विशेष रूप से साइबर-सुरक्षा जोखिमों के रूप में। फिर जलवायु जोखिमों का लगातार बढ़ता ख़तरा भी है। इस परिवेश में, आश्वासन संबंधी कार्य, पर्यवेक्षण के विस्तारित हाथ के रूप में कार्य करते हुए, जोखिमों की पहचान करने, उनके बारे में जानकारी और सक्रिय प्रबंधन की सुविधा प्रदान करने और उन्हें संकट में बदलने से रोकने में महत्वपूर्ण हैं।

वास्तव में, आश्वासन कार्य अपरिहार्य आधार के रूप में कार्य करते हैं, जो न केवल व्यक्तिगत वित्तीय संस्थान की स्थिरता बल्कि व्यापक वित्तीय प्रणाली का लचीलापन भी सुनिश्चित करते हैं। पर्यवेक्षण, जैसा कि मैं समझाने जा रहा हूं, रक्षा की चार पंक्तियों के बाद बहुत बाद में आता है।

1. जैसा कि आप जानते हैं, रक्षा की पहली पंक्ति व्यवसाय इकाई स्तर पर ही संचालित होती है और इसमें बैंक के दैनिक परिचालन के भीतर सक्रिय जोखिम प्रबंधन शामिल होता है। यहां, आश्वासन कार्य हर स्तर पर जोखिम जागरूकता और अनुपालन की संस्कृति को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
2. दूसरी पंक्ति मजबूत जोखिम प्रबंधन ढांचे, नीतियों और प्रक्रियाओं की स्थापना करके इस नींव पर निर्मित होती है। अनुपालन और जोखिम प्रबंधन कार्य, अपनी स्वतंत्रता और विशेषज्ञता के साथ, इन रूपरेखाओं को आकार देने और निगरानी करने में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।
3. रक्षा केंद्रों की तीसरी पंक्ति आंतरिक लेखापरीक्षा पर केंद्रित है, जो जोखिम प्रबंधन और आंतरिक नियंत्रण की प्रभावशीलता का एक उद्देश्यपूर्ण और व्यवस्थित मूल्यांकन प्रदान करती है। आंतरिक ऑडिट एक स्वतंत्र और व्यापक कवरेज, संपूर्ण परीक्षाओं और व्यावहारिक

* श्री स्वामीनाथन जे, डिप्टी गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक का भाषण - 10 जनवरी, 2024 - मुंबई में आश्वासन कार्यों के प्रमुखों के सम्मेलन में।

सिफारिशों को सुनिश्चित करके इस लाइन में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

4. यदि हम बाह्य लेखापरीक्षा को रक्षा की चौथी पंक्ति के रूप में लेते हैं, तो पर्यवेक्षण, रक्षा की पांचवीं पंक्ति बन जाता है, जो आश्वासन कार्यों द्वारा निर्धारित आधारभूत कार्य का पूरक है। पर्यवेक्षी निरीक्षण, हालांकि आवश्यक है, जोखिम-जागरूकता, अच्छी तरह से परिभाषित जोखिम प्रबंधन और अनुपालन प्रथाओं के साथ-साथ मजबूत आंतरिक और बाहरी ऑडिट की मजबूत नींव द्वारा समर्थित होने पर सबसे प्रभावी होता है।

रक्षा की इन पंक्तियों के बीच निर्बाध सहयोग एक मजबूत ढाल बन सकता है, जो न केवल व्यक्तिगत बैंकों बल्कि संभावित खतरों और कमजोरियों के खिलाफ संपूर्ण वित्तीय प्रणाली की सुरक्षा करेगा। इसलिए, आश्वासन कार्यों की प्रभावकारिता केवल आंतरिक शासन का मामला नहीं है, बल्कि वित्तीय ईकोसिस्टम के समग्र स्वास्थ्य के लिए एक महत्वपूर्ण आधार है।

रिज़र्व बैंक हमेशा से आंतरिक आश्वासन कार्यों द्वारा निभाई जाने वाली महत्वपूर्ण भूमिका से अवगत रहा है। तीन दशक से भी अधिक समय पहले 1992 में 'बैंकों में धोखाधड़ी और कदाचार पर समिति' (जिसे घोष समिति के नाम से भी जाना जाता है) की सिफारिशों के आधार पर 'अनुपालन अधिकारी' के पद को औपचारिक रूप दिया गया था। अनुपालन कार्य के अलावा, जोखिम प्रबंधन और आंतरिक ऑडिट पर भी कई निर्देश जारी किए गए हैं। आरबीआई के विभिन्न दिशानिर्देशों और निर्देशों में एक प्रमुख अंतर्निहित सिद्धांत पर बार-बार जोर दिया गया है कि आश्वासन कार्यों को प्रभावी ढंग से कार्य करने के लिए संगठन के भीतर पर्याप्त स्वतंत्रता और महत्ता होनी चाहिए।

अब मैं अनुपालन, जोखिम प्रबंधन और आंतरिक लेखापरीक्षा के क्षेत्र में कुछ विशिष्ट पहलुओं पर प्रकाश डालना चाहूंगा, जहां मेरा मानना है कि अधिक एकाग्रता और ध्यान दिया जा सकता है।

अनुपालन

बैंकिंग परिचालन की अखंडता सुनिश्चित करने में अनुपालन कार्य सबसे आगे है। मैं आपसे 'विनियमन- प्लस' दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह करूंगा, जहां संस्थान न केवल नियामक अपेक्षाओं को पूरा करता है बल्कि उससे भी आगे निकल जाता है। अनुपालन कार्य को केवल नियामक आवश्यकताओं के अनुपालन से आगे बढ़ना चाहिए। अनुपालन अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए कि उत्पाद, प्रक्रियाएं और परिणाम न केवल कानून या विनियमन के अक्षर, बल्कि भावना और इरादे का भी पूरी तरह से अनुपालन करते हैं। यह दृष्टिकोण न केवल विनियामक अनुपालन सुनिश्चित करता है बल्कि एक ऐसी संस्कृति का विकास भी सुनिश्चित करता है जो नैतिक आचरण और ठोस व्यावसायिक प्रथाओं को प्राथमिकता देती है।

हम यह भी चाहेंगे कि अनुपालन अधिकारी जोखिम मूल्यांकन रिपोर्ट (आरएआर) टिप्पणियों और जोखिम शमन योजनाओं (आरएमपी) पर उचित ध्यान दें। निरंतर अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए, टिप्पणियों के मूल कारण को संबोधित करना महत्वपूर्ण है। इसके अलावा, आरएमपी के लिए सहमत समय सीमा पर कोई समझौता नहीं होना चाहिए, और बैंक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि अगले निरीक्षण चक्र की शुरुआत से पहले सभी आरएमपी और आरएआर टिप्पणियों को व्यापक रूप से संबोधित किया जाए। लंबित अनुपालन पैराग्राफ एक वांछनीय स्थिति नहीं है और यह प्रबंधन के साथ-साथ बोर्ड द्वारा उचित ध्यान की कमी का प्रतिबिंब हो सकता है। ऐसे उदाहरण कड़ी पर्यवेक्षी कार्रवाई को भी आमंत्रित कर सकते हैं।

जैसा कि आप जानते होंगे, आरबीआई ने 2022 में दक्ष प्लेटफ़ॉर्म आरंभ किया था, जो एक वेब-आधारित एंड-टू-एंड वर्कफ़्लो एप्लिकेशन है, जिसमें कभी भी-कहीं भी सुरक्षित पहुंच होती है, जो अन्य बातों के साथ-साथ केंद्रित अनुपालन निगरानी की सुविधा प्रदान करती है। दक्ष का उपयोग करने के अलावा, मैं अनुपालन टीमों को आंतरिक अनुपालन की निगरानी के लिए आईटी समाधान तलाशने के लिए भी प्रोत्साहित करूंगा।

जोखिम प्रबंधन

जोखिम प्रबंधन को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि रणनीतिक कारोबार और पूंजीगत योजनाएं बैंक की जोखिम क्षमता के साथ

उचित रूप से संरेखित हों। स्तंभ 2 के तहत आंतरिक पूंजी पर्याप्तता मूल्यांकन प्रक्रिया या आईसीएएपी इस संबंध में महत्वपूर्ण है। स्तंभ 2 स्वीकार करता है कि स्तंभ 1 के तहत निर्धारित न्यूनतम विनियामक आवश्यकताएं बैंक द्वारा सामना किए जाने वाले जोखिमों के पूरे स्पेक्ट्रम को कवर नहीं कर सकती हैं । इसलिए, आईसीएएपी जोखिमों की एक विस्तृत श्रृंखला पर विचार करके, बैंकों को उनकी आंतरिक पूंजी आवश्यकताओं का व्यापक मूल्यांकन और प्रबंधन करने के लिए एक दूरंदेशी तंत्र प्रदान करता है। बैंकों को इसके अंतर्निहित मूल्य को पहचानना सीखना चाहिए और जोखिम की क्षमता और जोखिम मूल्यांकन के साथ पूंजी योजनाओं को संरेखित करने के लिए एक रणनीतिक उपकरण के रूप में आईसीएएपी दस्तावेज़ का उपयोग करना चाहिए।

दूसरा पहलू जिस पर मैं प्रकाश डालना चाहूंगा वह है जोखिम सीमाओं की सावधानीपूर्वक निगरानी। जोखिम सीमाओं में बार-बार उल्लंघन, उनके गैर-अनुसमर्थन या उनके नियमित अनुसमर्थन के साथ मिलकर, वित्तीय संस्थानों की स्थिरता और अखंडता के लिए महत्वपूर्ण खतरे पैदा करते हैं जो तत्काल वित्तीय निहितार्थों से परे हैं। यदि उल्लंघनों को सामान्यीकृत या नजरअंदाज कर दिया जाता है, तो कर्मचारी जोखिम सीमाओं को गैर-परक्राम्य सीमाओं के बजाय महज दिशानिर्देश के रूप में देख सकते हैं, जिससे संस्थान की समग्र जोखिम जागरूकता से समझौता हो सकता है। इसलिए, उल्लंघनों को व्यवस्थित रूप से संबोधित करना, गहन जांच करना और जोखिम प्रबंधन प्रथाओं को मजबूत करने के लिए सुधारात्मक उपायों को लागू करना अनिवार्य है।

आंतरिक लेखा परीक्षा

जहां तक आंतरिक लेखापरीक्षा का संबंध है, अक्सर हमें दायरे, कवरेज और आवधिकता में कमियों के साथ-साथ आंतरिक लेखापरीक्षा कार्य की स्वतंत्रता में समस्याएं आती हैं। जोखिम-आधारित आंतरिक ऑडिट में उचित दायरा, आवधिकता और स्वतंत्रता एक मजबूत शासन और जोखिम प्रबंधन ढांचे के आवश्यक घटक हैं।

स्कोपिंग प्रक्रिया को संगठन के जोखिम प्रोफाइल के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इसमें उन प्रमुख जोखिम क्षेत्रों की पहचान करना और प्राथमिकता देना शामिल है जिनकी गहन जांच की आवश्यकता है। आंतरिक ऑडिट को केवल एक शाखा/डिवीजन की ऑडिट रिपोर्ट पर निर्भर नहीं होना चाहिए, बल्कि किसी भी असामान्य प्रवृत्ति या आउटलेर्स की समय पर पहचान करने, उनकी भौतिकता की जांच करने और सिस्टम स्तर पर नियंत्रण स्थापित करके इन्हें ठीक करने के लिए केंद्रीकृत ऑफ-साइट एनालिटिक्स के लिए एक कार्यक्रम होना चाहिए। मैं प्रमुख जोखिम क्षेत्रों की शीघ्र पहचान की सुविधा के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के उपयोग सहित प्रौद्योगिकी का तेजी से लाभ उठाने के लिए आंतरिक ऑडिट को प्रोत्साहित करूंगा।

आंतरिक लेखापरीक्षा की आवधिकता जोखिम वातावरण की गतिशील प्रकृति के प्रति उत्तरदायी होनी चाहिए। उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में अधिक बार ऑडिट की आवश्यकता हो सकती है, जबकि कम जोखिम वाले क्षेत्रों में कम बार लेकिन नियमित मूल्यांकन हो सकता है। नियमित ऑडिट के अलावा, वास्तविक समय में जोखिमों का पता लगाने और प्रतिक्रिया देने के लिए एक सतत निगरानी ढांचा होना चाहिए।

आश्वासन कार्यों की स्वतंत्रता

अपनी बात समाप्त करने से पहले, मैं आश्वासन कार्यों की स्वतंत्रता के महत्व पर विस्तार से चर्चा करना चाहूँगा। ये कार्य किसी संगठन की शासन संरचना के भीतर एक महत्वपूर्ण जाँच और संतुलन के रूप में कार्य करते हैं। इसलिए, आश्वासन कार्यों की स्वतंत्रता यह सुनिश्चित करने के लिए मौलिक है कि आश्वासन गतिविधियाँ ईमानदारी, निष्पक्षता और प्रभावशीलता के साथ संचालित की जाती हैं। आश्वासन कार्यों के प्रमुखों के रूप में, आप अपने संगठनों के भीतर अपने संबंधित कार्यों की अखंडता और प्रभावशीलता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। आपको इन भूमिकाओं की स्वतंत्रता की रक्षा करने में सतर्क रहना चाहिए, दोहरे उत्तरदायित्व या अन्य परस्पर विरोधी भूमिकाओं के कारण उत्पन्न होने वाले समझौतों का विरोध करना चाहिए। हालाँकि व्यवसाय के मालिक अपने व्यावसायिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जोखिम लेने वाले माने जा सकते हैं, मैं आश्वासन कार्यों के प्रमुखों से आग्रह करूंगा कि वे विवेक के रखवाले बनें और खुद को कुछ अल्पकालिक प्राथमिकताओं से प्रभावित न होने दें।

उद्योग में अक्सर कुछ मित्र यह मानते हैं कि केवल व्यावसायिक कार्य का प्रबंधन करने से कैरियर की संभावनाओं

में सुधार होता है, जबकि आश्वासन कार्यों का प्रबंधन होता है, जिन्हें आम तौर पर गैर ग्लैमरस माना जाता है। मैं अपने व्यक्तिगत अनुभव से आपको आश्वस्त कर सकता हूं कि ऐसा नहीं है। पदोन्नति व्यक्तिगत प्रदर्शन, कौशल और संगठनात्मक आवश्यकताओं के संयोजन पर आधारित होती है। जो अधिकारी उत्कृष्टता, नेतृत्व और संगठन की सफलता में योगदान देने की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं, उनका अपने करियर में आगे बढ़ना तय है, भले ही वे बैंक में आश्वासन कार्यों या अन्य क्षेत्रों में हों।

निष्कर्ष

अंत में, आश्वासन कार्यों के प्रमुखों का यह उद्घाटन सम्मेलन वित्तीय स्थिरता को बनाए रखने में इन कार्यों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। चूँकि हम वित्तीय सेवा उद्योग में अच्छे समय की ओर बढ़ रहे हैं, आइए हम आत्मसंतुष्ट न हो जाएँ। इसके बजाय, हमें सक्रिय रूप से उभरते जोखिमों की पहचान करके और उन्हें कम करके सतर्क रहना चाहिए। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारे आश्वासन कार्यों में स्वतंत्रता और प्रभावशीलता के प्रति प्रतिबद्धता केवल आंतरिक शासन का मामला नहीं है बल्कि वित्तीय ईकोसिस्टम के समग्र स्वास्थ्य के लिए आधारशिला है।

इसके साथ, मैं एक बार फिर आप सभी को नव वर्ष की हार्दिक शुभकामनाएं देना चाहता हूं। आने वाला वर्ष आपके पेशेवर और व्यक्तिगत दोनों प्रयासों में सफलता, समृद्धि और पूर्णता लाए। जैसे-जैसे हम नई चुनौतियों और अवसरों की ओर बढ़ रहे हैं, हमारे सामूहिक प्रयास वित्तीय क्षेत्र की निरंतर वृद्धि और लचीलेपन में योगदान देंगे।

धन्यवाद।